RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

विचारक विश्वास और इमारतें

Chapter-4 | Part-1



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?



1. साँची का महास्तूप
2. बौद्ध धर्म की पृष्ठभूमि
3. यज्ञों की परंपरा
4. नियतिवादी और भौतिकवादी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

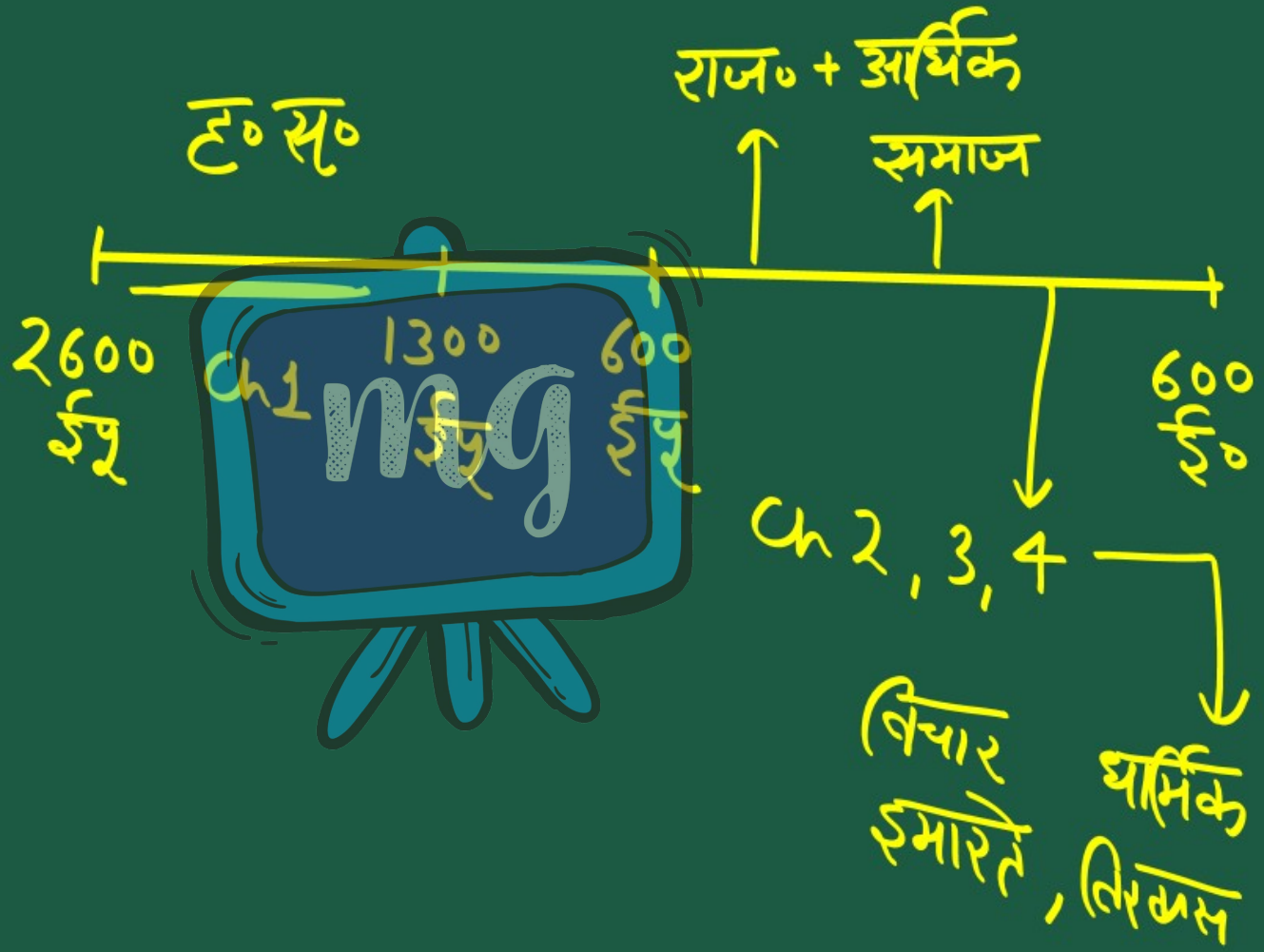

विचारक, विश्वास, इमारतें

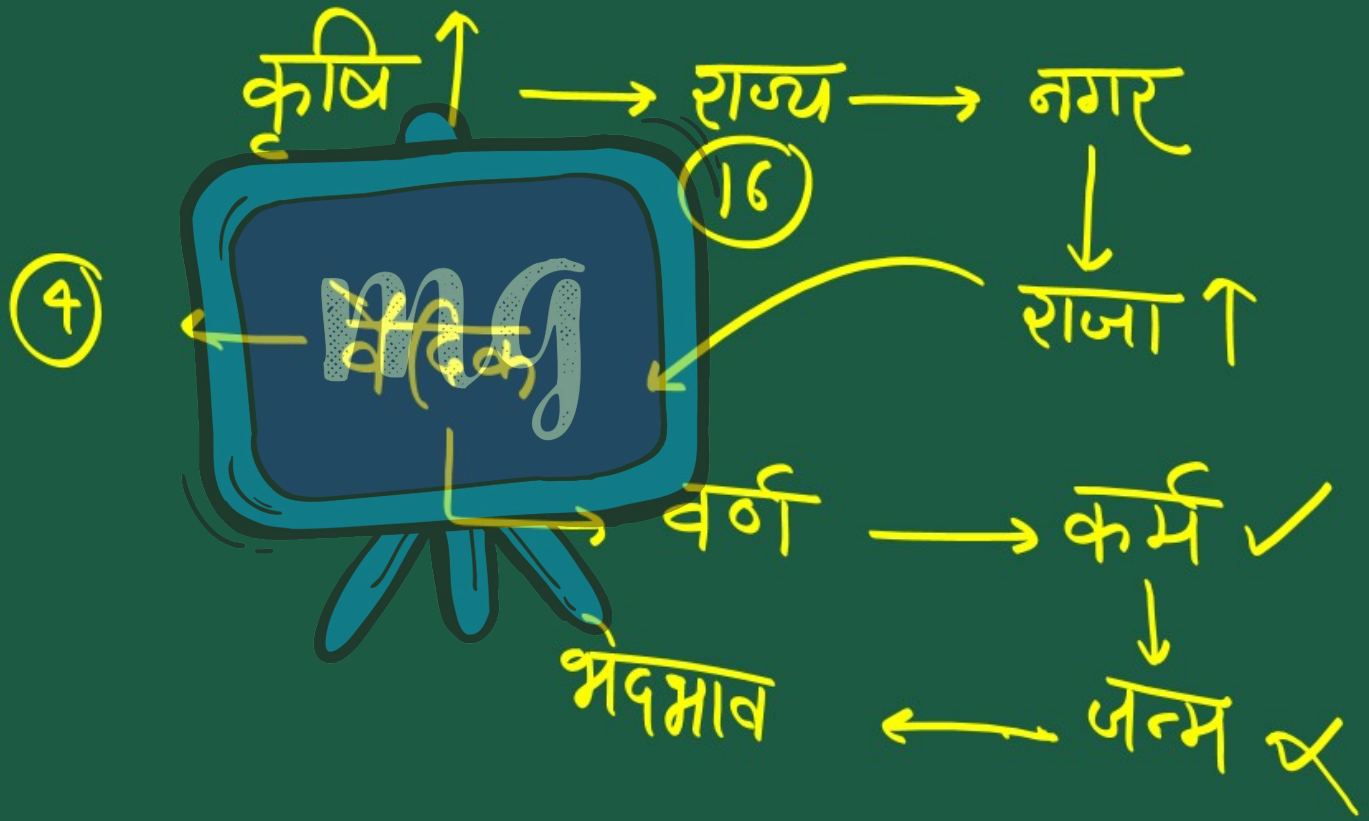

नई विचारक



महावीर + बुद्ध

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इस अध्याय में हम 1000 साल लंबी यात्रा पर जाएँगे।
- इसमें हम दार्शनिकों के बारे में पढ़कर समाज की स्थित जानने का प्रयास करेंगे।
- हम यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि दार्शनिकों के विचार कैसे पहले मौखिक और फिर लिखित परंपराओं में संग्रहित हुए तथा उन्हें स्थापत्य और मूर्तिकला के माध्यम से कैसी अभिव्यक्ति मिली।
- ये सब चीजें जनता पर उनके स्थायी प्रभाव को दर्शाते हैं।
- हालाँकि हम बौद्ध धर्म का विशेष अध्ययन करेंगे।
- यद्यपि बौद्ध परंपरा अकेली विकसित नहीं हुई। दूसरी कई परंपराएँ थीं जो एक-दूसरे के साथ लगातार वाद-विवाद और संवाद चला रही थीं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इन रोमांचक विचारों और विश्वासों की दुनिया के पुनर्निर्माण के लिए जो स्रोत हैं उनमें

(i) बौद्ध, जैन और ब्राह्मण ग्रंथों के अलावा

(ii) इमारतों और अभिलेखों जैसे भौतिक साक्ष्य प्रभूत मात्रा में हैं।

(iii) इस युग की बची हुई इमारतों में सबसे सुरक्षित है साँची का स्तूप।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सांची का महा स्तूप

भोपाल

50 km

84000 + 'स्तूप'



सांची का महान स्तूप

स्तूप - मिट्टी या पत्थर का ऊंचा ढेर। टीला (बौद्ध धर्म के लोगों का पूजनीय स्थल, अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से करके उन पर मुख्य शहरों के स्तूप बनवाये)।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

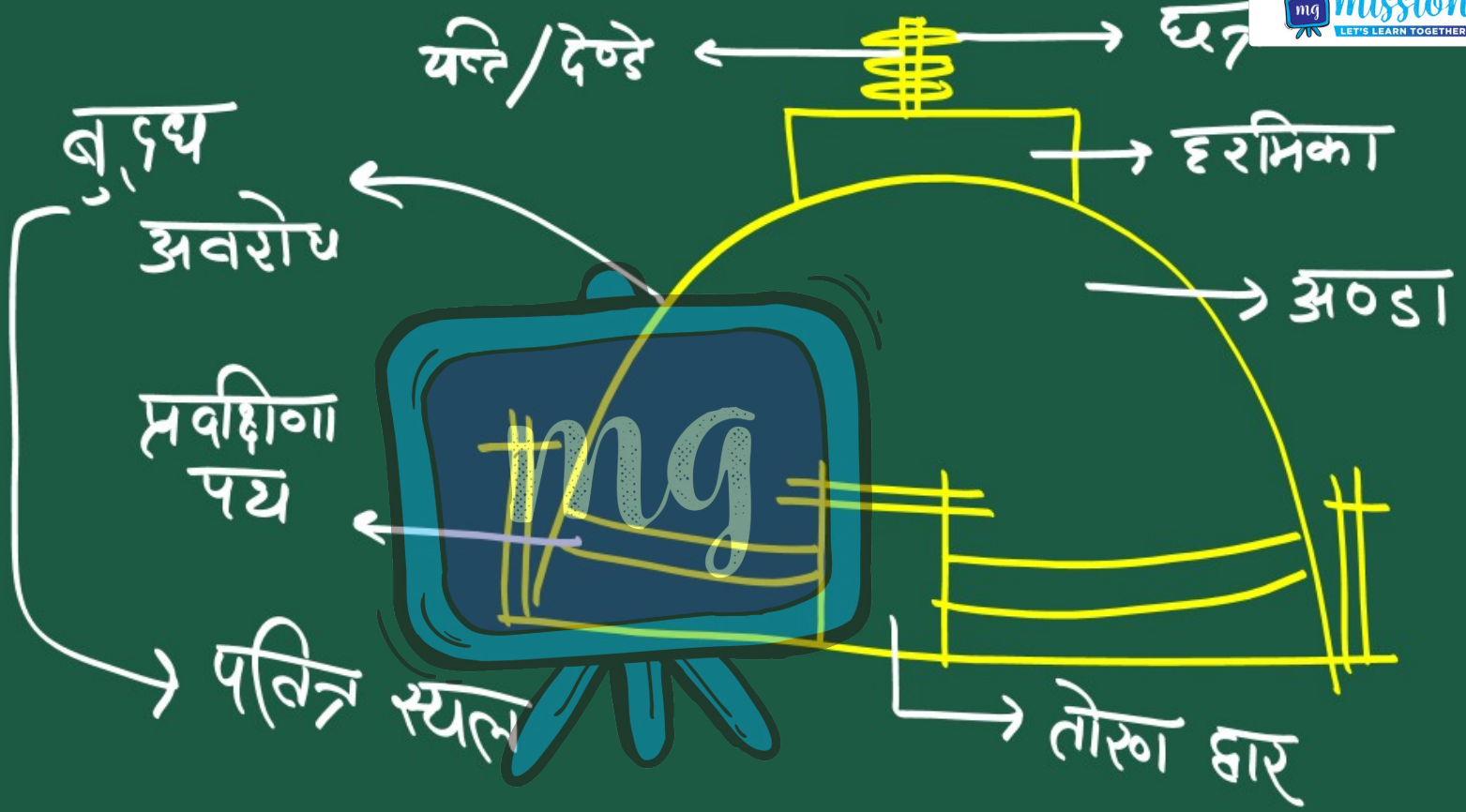

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चैत्य → बौद्ध मंदिर

विहार → भिक्षुओं की रिहाइश।

चैत्य – यह एक बौद्ध मंदिर होता है जहां प्रार्थना की जाती है। इनमें स्तूप समाहित होता है।

विहार – भिक्षुओं और भ्रमणों के रहने की व्यवस्था।




mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- 19वीं सदी के यूरोपियों में साँची के स्तूप को लेकर काफ़ी दिलचस्पी थी।
- फ्रांसीसियों ने सबसे अच्छी हालत में बचे साँची के पूर्वी तोरणद्वार को फ्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए शाहजहाँ बेगम से फ्रांस ले जाने की इजाज़त माँगी।
- कुछ समय के लिए अंग्रेज़ों ने भी ऐसी ही कोशिश की।
- सौभाग्यवश फ्रांसिसी और अंग्रेज़ दोनों ही बड़ी सावधानी से बनाई प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट हो गए।
- इस प्रकार मूल कृति भोपाल राज्य में अपनी जगह पर ही रही।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

→ आर्थिक सहयोग + बचाव



भोपाल शासकों का योगदान –

- भोपाल के शासकों –
  (i) शाहजहाँ बेगम व उनकी उत्तराधिकारी
  (ii) सुल्तानजहाँ बेगम, ने इस प्राचीन स्थल के रख-रखाव के लिए धन का अनुदान दिया।
- आश्चर्य नहीं कि जॉन मार्शल ने साँची पर लिखे अपने महत्वपूर्ण ग्रंथों को सुल्तानजहाँ को समर्पित किया।
- सुल्तानजहाँ बेगम ने वहाँ पर एक संग्रहालय और अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया।
- वहाँ रहते हुए ही जॉन मार्शल ने उपर्युक्त पुस्तकें लिखीं। इस पुस्तक के विभिन्न खंडों के प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम ने अनुदान दिया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इसलिए यदि यह स्तूप समूह बना रहा है तो इसके पीछे कुछ विवेकपूर्ण निर्णयों की बड़ी भूमिका रही है।
- शायद हम इस मामले में भी भाग्यशाली रहे हैं कि इस स्तूप पर किसी रेल ठेकेदार या निर्माता की नज़र नहीं पड़ी।
- यह उन लोगों से भी बचा रहा जो ऐसी चीज़ों को यूरोप के संग्रहालयों में ले जाना चाहते थे।
- बौद्ध धर्म के इस महत्वपूर्ण केंद्र की खोज से आरम्भिक बौद्ध धर्म के बारे में हमारी समझ में महत्वपूर्ण बदलाव आए।
- आज यह जगह भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के सफल मरम्मत और संरक्षण का जीता जागता उदाहरण है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. परिभाषा :
a) स्तूप b) चैत्य c) विहार

Q. सांची स्तूप को प्रकाश में लाने और उसके रखरखाव में किसका योगदान था?

Q. फ्रांसीसी और अंग्रेज़ क्या ले जाना चाहते थे?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बौद्ध-धर्म की पृष्ठभूमि



यज्ञ और विवाद

- ईसा पूर्व 1000 वर्ष का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है।
- इस काल में ईरान में जरथुस्त्र (पारसी धर्म के संस्थापक)
- चीन में खुंगत्सी (कनफ्यूशियस)
- यूनान में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु और
- भारत में महावीर स्वामी तथा महात्मा बुद्ध तथा कई अन्य चिंतकों का उद्भव हुआ।
- इन्होंने जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास किया।
- साथ ही वे इंसानों और विश्व व्यवस्था के बीच रिश्ते को समझने की कोशिश कर रहे थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

महाजनपद

- यही वह समय था जब गंगा घाटी में नए राज्य और शहर उभर रहे थे।
- इस समय सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में कई तरह के बदलाव आ रहे थे
- ये मनीषी इन बदलते हालात को भी समझने की कोशिश कर रहे थे।

1000 ई.पू.

विचारकों का उद्भव

गंगा घाटी में नए राज्यों का उदय

परिवर्तन

सामाजिक

आर्थिक

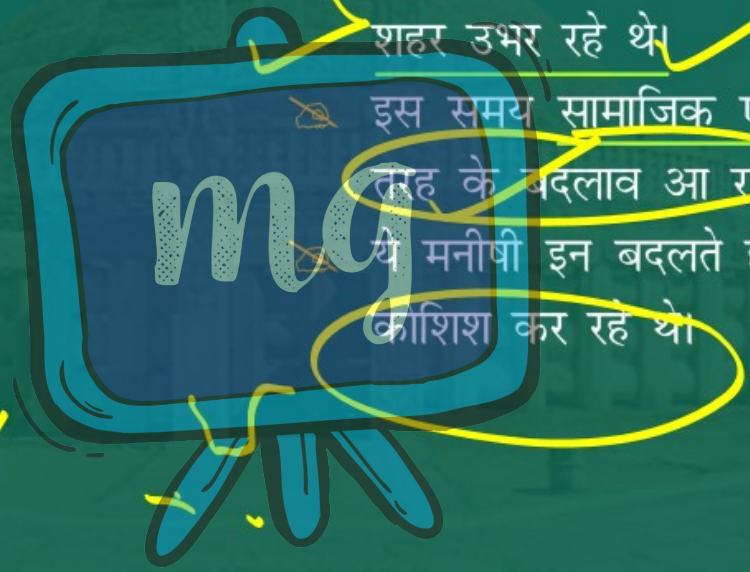

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यज्ञों की परंपरा



- चिंतन, धार्मिक विश्वास और व्यवहार की कई धाराएँ प्राचीन युग से ही चली आ रही थीं।
- पूर्व वैदिक परंपरा जो (1500 ई. पू.–1000 ई. पू.) ऋग्वेद में संकलित है, भी वैसी ही एक परंपरा थी।
- ऋग्वेद अग्नि, इंद्र, सोम आदि कई देवताओं की स्तुति का संग्रह है।
- यज्ञों के समय इन स्रोतों का उच्चारण किया जाता था और लोग मवेशी, बेटे, स्वास्थ्य, लंबी आयु आदि के लिए प्रार्थना करते थे।
- शुरू-शुरू में यज्ञ सामूहिक रूप से किए जाते थे। (लगभग 1000 ई.पू. – 500 ई.पू;)
- कुछ यज्ञ घरों के मालिकों द्वारा किए जाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- राजसूय और अश्वमेध जैसे जटिल यज्ञ सरदार और राजा किया करते थे।
- इनके अनुष्ठान के लिए उन्हें ब्राह्मण पुरोहितों पर निर्भर रहना पड़ता था।

mg

राजा

राजा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

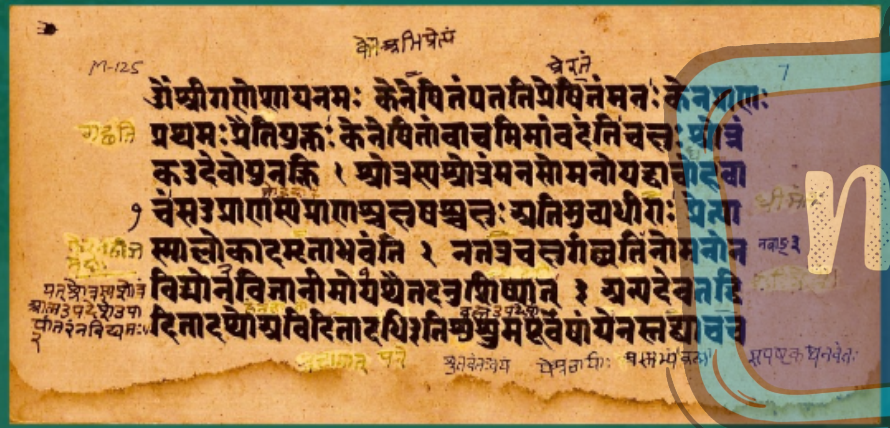

नये प्रश्न :-

- उपनिषदों (छठी शताब्दी ई.पू.) में पाई जाने वाली विचारधाराओं से यह पता चलता है कि लोग
  1. जीवन का अर्थ
  2. मृत्यु के बाद जीवन की संभावना
  3. पुनर्जन्म के बारे में जानने के उत्सुक थे।
- क्या पुनर्जन्म अतीत के कर्मों के कारण होता था? ऐसे मुद्दों पर जोरदार बहस होती थी।
- मनीषी यथार्थ की वास्तविकता को जानने तथा अभिव्यक्ति करने में लगे थे।
- वैदिक परंपरा से बाहर के कुछ दार्शनिक यह सवाल उठा रहे थे कि सत्य एक होता है या अनेक।
- लोग यज्ञों के महत्व के बारे में भी चिंतन करने लगे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

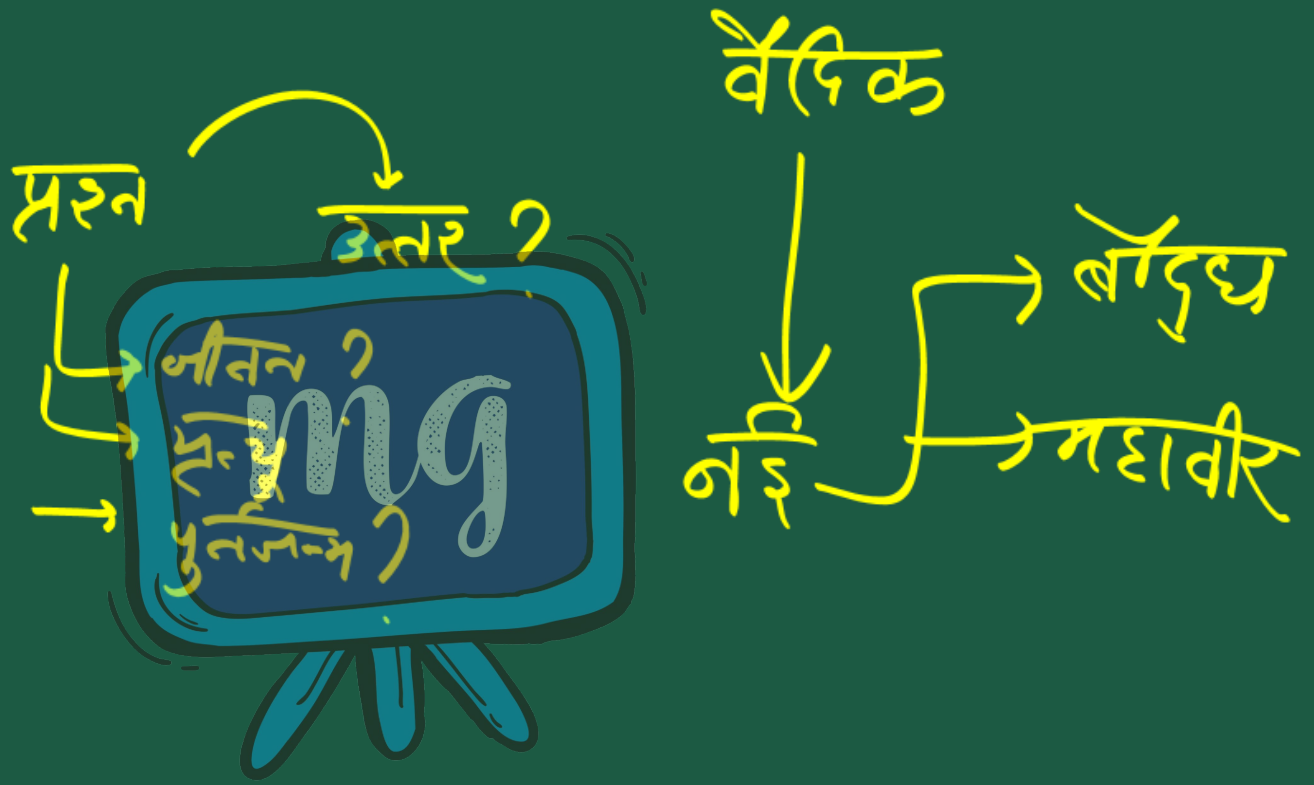

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

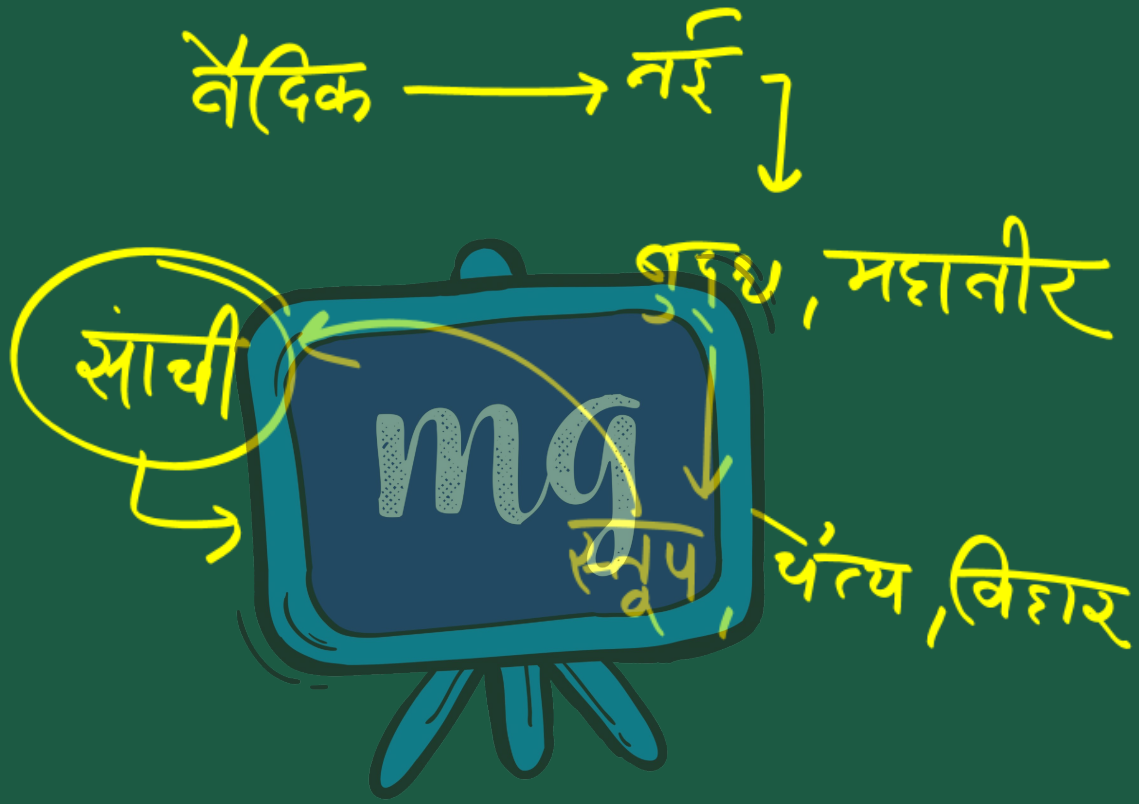

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





वाद-विवाद और चर्चाएं

- समकालीन बौद्ध ग्रंथों में 64 संप्रदायों या (चिंतन परंपराओं) का उल्लेख मिलता है।
- इसमें हमें जीवंत चर्चाओं ओर विवादों की एक झांकी मिलती है।
- शिक्षक एक जगह से दूसरी जगह घूम-घूम कर अपने दर्शन तथा विश्व के विषय में अपनी समझ को लेकर एक दूसरे से तथा सामान्य लोगों से तर्क-वितर्क करते थे।
- ये चर्चाएं कुटागारशालाओं (नुकीली छत वाली झोंपडी) या ऐसे उपवनों में होती थी जहां घुमक्कड़ मनीषी ठहरा करते थे।